

मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज



■ दस्ताने भीलवाड़ा @ चितौड़गढ़/गंगरार

मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कही। उन्होंने आगे कहा कि जैसे सूर्य को कभी ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता वैसे ही मेवाड़ का इतिहास ही नहीं बल्कि देश की स्वतन्त्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा।

स्वागत भाषण देते हुए संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत

ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए हैं, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबों के फोटो में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हरएक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतन्त्रता सेनानी महापुरुषों दुर्गादास गठीड़, गुरु गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द को सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतन्त्रता संग्राम के विचारकों में से

एक बताया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस सुझाव की सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंगदेवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्रेता नन्द लाल पंचाली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साह तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरुणा दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंग देवोत, बिरदी चन्द, बालकृष्ण लड्डा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं। संगोष्ठी का आरम्भ कुलगीत एवं सरस्वती वंदना के साथ

तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डी.के. शर्मा, निदेशक, ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट, हरीश गुरनानी, उपकुलसचिव दीसि शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इन्जिनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा, डॉ. निखिल गर्ग, डॉ. भरत वैष्णव, डॉ. जोरावर सिंह, प्रवीण टांक, अभिषेक श्रीवास्तव, पहलवान सालवी, डॉ. सन्दीप शर्मा, डॉ. हितकरण सिंह, रोमेन्द्र सिंह, रतन वैष्णव, राकेश, विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष सहित अन्य विश्वकर्मण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रादेशिक

जयपुर, संविवार, 25 सितम्बर 2022

मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रथम दिन

चूज ज्योति

चित्तौड़गढ़/गंगारारा। मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कही। उन्होंने आगे कहा कि जैसे सूर्य को कभी ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता वैसे ही मेवाड़ का इतिहास ही नहीं अतिक देश की स्वतन्त्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा। उन्होंने आगे कहा कि संविधान अधीजों के शासन काल में लिखा गया जो अधीजों के अनुरूप ही भारतीय संस्कृति को छिप भिज कर प्रस्तुत करने का धृणित प्रयास था जो समय के साथ गलत साखित हो रहा है, अब अवश्यकता है कि हम इतिहास के ऊ अनुरूप पहनूआओं को जनमानस के सम्मने लाएं जिन्हे दुर्भावनापूर्वक छुगा दिया गया था या किर तोड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समक्ष पेप किया



गया। स्वागत भाषण देते हुए संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए हैं, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैश्वलक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबों के पत्रों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हरएक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतन्त्रता सेनानी महामुर्खों द्वारादास राठीड़,

गुरु गोविंद सिंह, महाराजा प्रताप और शिवाजी आदि का जिक्र किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतन्त्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरीअम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाद्यक्रम में शामिल किया जाए। कुलधियांडा डॉ. गदिया ने इस सुझाव की सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्रेता नद, लाल फंदोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने

शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरुणा देवोत, विरद्धी चन्द, बालकृष्ण लक्ष्मी और डॉ. मनोज कुमार बहरावल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं। संगोष्ठी का आमंत्रण वृत्तान्त एवं सर्वती बंदा के साथ तथा समाप्त राष्ट्रान के साथ हुआ। कार्बंकम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया।

इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डॉ. के. शर्मा, निदेशक, ट्रेनिंग एवं एलेसमेंट, हीरा गुरनानी, उपकुलसचिव दीपि शास्त्री, डॉन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डॉन इन्जिनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पौष्ण शर्मा, डॉ. निखिल गर्ग, डॉ. भरत वैष्णव, डॉ. जोगकर सिंह, प्रवीण टंक, अभिषेक श्रीवास्तव, फहलवान सालवी, डॉ. सनदीप शर्मा, डॉ. हितकरण सिंह, रोमेन्द्र सिंह, राज वैष्णव, राकेश, विभिन्न संकारण एवं विभागों के अध्यक्ष सहित अन्य पिक्चरगांग एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रथम दिन

राजस्थान दर्शन

चित्तौड़गढ़/गंगागढ़। मेवाड़ का इतिहास सुर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुयाया नहीं जा सकता। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में 'भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा' विषयक दो दिवसीय गण्डीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कही। उहोने आगे कहा कि जैसे सूर्य को कभी ज्यादा देर तक छुयाया नहीं जा सकता वैसे ही मेवाड़ का इतिहास ही नहीं बल्कि देश की स्वतन्त्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा। उहोने आगे कहा कि संविधान अंगेजों के



शासन काल में लिखा गया। जो अंगेजों के अनुरूप ही भारतीय संस्कृति को छिन भिन्न कर प्रस्तुत करने का वृत्तित प्रयास था जो इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। समय के साथ गलत साबित हो रहा है, अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलूओं को जनमानस के सामने लाएं। जिन्हे दृभावनापूर्वक छुआ दिया गया था या फिर ताड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समक्ष पेष किया गया। स्वागत भाषण देते हुए संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि

जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए हैं, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबों के पत्रों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हरएक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने

चार स्वतन्त्रता सेनानी महापुरुषों दुर्गादास राठौड़, गुरु गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। उहोने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतन्त्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिअम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस सुझाव को सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंगदेवात, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्रेता नन्द लाल पचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरुणा दुबे रहीं। दूरीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंग देवात, विरदी चन्द, बालकृष्ण लहूा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं। संगोष्ठी का आरम्भ कुलगीत एवं सरस्वती वंदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डॉ. के. शर्मा, निदेशक, ट्रेनिंग एवं लेसमेंट, हरीश गुणानी, उपकुलसचिव दीपि शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इन्जिनियरिंग डॉ. आर. गुजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा, डॉ. निखिल गर्ग, डॉ. भरत वैष्णव, डॉ. जोरावर सिंह, प्रवीण टांक, अभिषेक श्रीवारतव, पहलवान सालवी, डॉ. सन्दीप शर्मा, डॉ. हितकरण सिंह, रोमेन्द्र सिंह, रतन वैष्णव, राकेश, विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष सहित अन्य पिक्चरगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

इतिहास के अनछुए पहलुओं को जनमानस के समक्ष लाने की ज़रूरत

» स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

गंगाराम, 24 सितम्बर (जस.). मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है, जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता।

मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कहा कि देश की स्वतंत्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा। इतिहास औरोजों के शासन काल में लिखा गया। जो औरोजों के अनुरूप ही भारतीय संस्कृति को छिन पित्र कर प्रस्तुत करने का धृणित प्रयास समय के साथ गलत साबित हो रहा है, अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलुओं को जनमानस के सामने लाएं जिन्हे दुर्भावना पूर्वक छुपा दिया गया था या फिर तोड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समक्ष पेश किया गया।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतंत्रता संग्राम हुए हैं, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने



के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबों के पत्रों में दर्ज है, लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हर एक के जेहन में जज्ब हो जाएगा।

प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतंत्रता सेनानी महापुरुषों दुर्गादास राठौड़, गुरु गोविन्द सिंह,

महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतंत्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाद्यक्रम में शमिल किया जाए। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस सुझाव की सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंग देवोत, गोपाल जाट, विक्रम रिंह, श्रेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरुण दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंग देवोत, विरदी चन्द, बालकृष्ण लड्डा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं।

संगोष्ठी का शुभारंभ कुलगीत एवं सरस्वती वंदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डीके शर्मा, निदेशक ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट हरीश गुरनानी, उप कुलसचिव दीपि शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इंजिनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा आदि सहित विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह : डॉ. गदिया

गंगरार। मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। यह विचार मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कही। उन्होंने कहा कि अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलूओं को जनमानस के सामने लाएं जिन्हे दुर्भावनापूर्वक छुपा दिया गया था या फिर तोड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समक्ष पेश किया गया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए हैं, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबों के पन्नों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हरएक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारांगदेवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्वेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरुणा दुबे थे। संचालन राजेष भट्ट तथा डॉ. योगेष व्यास ने किया। इस अवसर पर डी.के. शर्मा, हरीष गुरनानी, दीपि शास्त्री, प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, प्रो. चेताली अग्रवाल, डॉ. आर. राजा आदि उपस्थित रहे।



भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज

चिनौड़गढ़ (प्रातःकाल संवाददाता)। मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। उक्त विचार मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णमयात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने व्यक्त किये। डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए हैं, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबों के पज्जों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हर एक के जेहन में जन्म हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. गदिया ने चार स्वतन्त्रता सेनानी महापुरुषों दुर्गदास यठौड़, गुरु गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का जिक्र किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतन्त्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह मुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस मुझाव की



लंगोष्ठी में मौजूद विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य।

सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, चेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साह तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरुणा दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंग देवोत, विरद्धी चन्द, बालकृष्ण लड्डा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं। संगोष्ठी का आरम्भ कुलगांत एवं सरस्वती वंदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का

संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डॉ.के. शर्मा, निदेशक, ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट, हरीश गुरनानी, उपकुलसचिव दीपि शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इन्जीनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा, डॉ. निखिल गर्ग, डॉ. भरत वैष्णव, डॉ. जोगवर सिंह, प्रवीण टांक, अधिपेक श्रीवास्तव, पहलवान सालवी, डॉ. सन्दीप शर्मा, डॉ. हितकरण सिंह, रोमेन्द्र सिंह, रतन वैष्णव, राकेश, विभिन्न मंकायों एवं विभागों के अध्यक्ष सहित अन्य शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

इतिहास के अनछुए पहलुओं को जननानस के समक्ष लाने की ज़ाहरत

» स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

ग्रन्थालय, 24 सितंबर (जम.).। मेवाड़ के इतिहास में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के फले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करने हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कहा कि देश का स्वतंत्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन मृत्यु के समान मिकल कर सब के दिलों में सच्च वीर चमक पैदा करेगा। इतिहास ओजों के शासन काल में लिखा गया। जो अंग्रेजों के अनुसार ही भारतीय समरूपता को किंवित कर प्रस्तुत करने का पूर्णित प्रयत्न समय के साथ गलत भावित हो रहा है, अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलुओं को जनगणन्य के सामने लाए जिनके दुर्भावना पूर्वक हुए दिया गया था। या फिर ताड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समझ पेरा किया गया।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चूर्णवत ने कहा कि जिनमें भी स्वतंत्रता संग्राम हुए हैं, उनमें आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने



के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैष्ण लक्ष्मीनारायण जीवी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मूल्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह शोनो ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिहरेम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए सुनाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल हिला जाए। कुलाधिकारी डॉ. गदिया ने इस सुनाव की मराना करते हुए उसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निवेश दिया।

प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतंत्रता मेज़ानी महापुरुषों दुर्गादास गठी, गुरु गोविन्द सिंह,

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारग देवोत, गोपेन्द्र जाट, विक्रम सिंह, छेता नन्द ललत पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहु तथा उपाध्यक्ष डॉ. असूणा देवे रहे। मूलीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारग देवोत, विक्रम चन्द, बालकृष्ण लक्ष्मी और डॉ. मनोज कुमार चतुरकाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहे।

संगोष्ठी का शुभारंभ कूलगीत एवं सरस्वती वदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। काव्यक्रम का संचालन शजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश लालम ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक दोनों शमानी, निदेशक ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट हरीश गुरुनामी, डॉ. कुलसचिव दोनों शास्त्री, डॉन फाइन आरसे प्रो. डॉ. विक्रलेखा सिंह, डॉ. योगेश लालम आदि दोनों शास्त्री, डॉ. गोविन्द गोविन्द सिंह, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. योगेश शमानी आदि सहित विभिन्न मंकायों एवं विभिन्न के अध्यक्ष, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है

भारतीय स्वतन्त्रता

संग्राम पर आधारित दो
दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

चित्तोड़गढ़ मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कही। उन्होंने कहा कि जैसे सूर्य को कभी ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता वैसे ही मेवाड़ का इतिहास ही नहीं बल्कि देश की स्वतन्त्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सब की चमक पैदा करेगा। उन्होंने कहा कि सविधान अंगेजों के शासन काल में लिखा गया। जो भारतीय संस्कृति को छिन्न पिन्न कर प्रस्तुत करने का प्रयास था जो समय के साथ गलत साधित हो रहा है। अब

आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनसुए पहलुओं को जनमानस के सामने लाएं जिन्हे दुर्भावनापूर्वक छुपा दिया गया था। संगोष्ठी के संयोजक डॉण् लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए हैं उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबों के पत्रों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हर एक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतन्त्रता सेनानी महापुरुषों दुर्गादास राठोड़, गुरु गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़

विश्वविद्यालय के पाद्यर में शामिल किया जाए। दूसरे सत्र में डॉण् हेमन्द्र सिंह सारांगदेवोत्तर गोपाल जाटए विर म सिंहए श्वेता नद लाल पंचोलीए डॉण् शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र के अध्यक्ष डॉण् मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉण् अरुणा दुबे रही। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारांग देवोत्तर, विरटी चन्द, बालकृष्ण लद्दा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रही। संचालन राजेश भट्ट तथा डॉण् योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डीप्केण् शर्मा एवं निदेशक ए. ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट ए. हरीश गुरनानी एवं उपकूलसचिव दीपि शास्त्री, डीन पाइन आर्द्दसचिव लोखा सिंह, चेताली अग्रबाल, आर. राजा, गुलजार अहमद, पीयूष शर्मा, निखिल गर्म, भरत वैष्णव, जोरावर सिंह प्रवीण टांक उपस्थित रहे।